ऋग्वेद

मण्डल १०

सूक्त १९१

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Ṛigveda

Maṇḍala 10

Sukta 191

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

साराँश

इस सूक्त में विभिन्न तत्त्वों, प्राणियों, मनुष्यों, राष्ट्र के नागरिकों और दलों के सदस्यों में सौहार्द व सामजस्य के लिए प्रार्थना व निर्देश है। प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है है कि वह स्वार्थ से ऊपर उठकर स्वयं से पहले अपने दल, राष्ट्र व जगत के विषय में सोचे और ठीक प्रकार से अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करे।

Synopsis

This composition contains prayers and directives for harmony between various elements, living beings, human race, citizens and team members. Every human has been directed to rise above selfish motives and prioritize the fulfillment of his/her duties towards the group, nation, humanity and the world as a whole before his/her self interest.

३० मात्राओं वाले विराडनुष्टुप् छन्द व गान्धार स्वर में निबद्ध प्रथम मन्त्र में प्रभु के द्वारा जड़ व जीवों मे स्थापित सामजस्य का वर्णन है।

संवननः ऋषिः। अग्निः देवता।

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥१॥ ऋग् १०:१९१:१

सम्ऽसम्। इत्। युवसे। वृषन्। अग्ने। विश्वानि। अर्यः। आ।
इळः। पदे। सम्। इध्यसे। सः। नः। वसूनि। आ। भर ॥१॥

(*अग्ने*) **हे ज्ञान के प्रकाशक!** (*वृषन्*) **हे सुखों की वर्षा करने वाले परमेश्वर! आप ही सब के** (*अर्यः*) **स्वामी हो। आपने** (*इत्*) **ही जगत की** (*विश्वानि*) **सभी जड़ वस्तुओं और चेतन प्राणियों को** (*युवसे*) **भली प्रकार** (*आ*) **मिलाकर उनमें** (*सम्ऽसम्*) **सामजस्य स्थापित किया है।** (*इळः*) **वेद वाणी की** (*पदे*) **ऋचाओं में जो सब ओर से** (*सम्*) **समयक्** (*इध्यसे*) **प्रकाशित है** (*सः*) **वह आप ही हैं। आप** (*नः*) **हमें** (*वसूनि*) **सुख समृद्धि प्रदान करने वाले धन** (*आ*) **सब ओर से** (*भर*) **प्राप्त कराईये।**

हे प्रभू तुम शक्ति शाली, हो बनाते सृष्टि को। वेद सब गाते तुम्हे है कीजिए धन वृष्टि को॥

The first mantra with 30 vowels, composed in *viraaḍ-anuṣhṭup chhandaḥ* and *gaandhaaraḥ svaraḥ*, describes the harmony between living beings and non-living things.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, **devataa** agniḥ

1. Om sansamid-yuvase vṛiṣhnn-agne vishvaany-arya aa
lḷaspade sam-idhyase sa no vasoonyaa bhara Ṛig 10.191.1

(*agne*) **O provider of the illumination of knowledge! O** (*arya*) **Lord** (*vṛiṣhnn*) **showering the bliss! You have** (*id*) **indeed brought** (*vishvaany*) **all elements** (*yuvase*) **together and** (*aa*) **created** (*sansam*) **harmony between all living being and non-living things. You are** (*sa*) **the one whose** (*idhyase*) **illuminations is** (*sam*) **all over in the** (*pade*) **hymns of the** (*lḷas*) **Vedas. Please** (*bhara*) **grant** (*no*) **us** (*vasoony*) **abundant wealth** (*aa*) **from all directions.**

३२ मात्राओं वाले अनुष्टुप् छन्द व गान्धार स्वर में निबद्ध दूसरे मन्त्र में सबके लिए सौहार्दपूर्वक जीवन जीने का संदेश है।

संवननः ऋषिः। सञ्ज्ञानम् देवता।

सं ग॑च्छध्वं॒ सं व॑दध्वं॒ सं वो॒ मनां॑सि जानताम् ।
देवा॒ भा॒गं यथा॒ पूर्वे॑ संजाना॒ना उ॒पास॑ते ॥२॥ ऋग् १०:१९१:२

सम् । ग॒च्छ॒ध्व॒म् । सम् । व॒द॒ध्व॒म् । सम् । वः॒ । मनां॑सि । जा॒न॒ता॒म् ।
दे॒वाः । भा॒गम् । यथा॑ । पूर्वे॑ । स॒म्ऽजा॒ना॒नाः । उ॒पऽआस॑ते ॥२॥

हे मनुष्यों! तुम परस्पर (*सम्*) **मिलकर** (*गच्छध्वम्*) **चलो,** (*सम्*) **सौहार्दपूर्वक** (*वदध्वम्*) **वार्तालाप करो और** (*वः*) **तुम्हारे** (*मनांसि*) **मनों में** (*सम्*) **एक दूसरे के हित के विचार** (*जानताम्*) **घर करे ।** (*यथा*) **जैसे** (*पूर्वे*) **प्राचीन समय से** (*देवाः*) **विद्वान** (*सम्ऽजानानाः*) **एकमत हो** (*भागम्*) **अपने अपने भाग के कर्त्तव्यों का पालन करना ही** (*उपऽआसते*) **उपासना करना मानते आयें हैं वैसे ही तुम भी अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करो।**

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो । पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ॥

The second mantra with 32 vowels, composed in *anuṣhṭup chhandaḥ* and *gaandhaaraḥ svaraḥ*, advices all humans to live in harmony with each other.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, **devataa** sañjñaanam

2. Om saṅ gachchhadhvan sam vadadhvan
sam vo manaansi jaanataam
devaa bhaagañ yathaa poorve
sañ jaanaanaa upaasate Ṛig 10.191.2

O Humankind! You should assemble and (*gachchhadhvan*) **march forward with a** (*saṅ*) **common purpose. You should** (*vadadhvan*) **confer** (*sam*) **together with open minds and** (*jaanataam*) **pool** (*vo*) **your** (*manaansi*) **thoughts for** (*sam*) **integrated wisdom. Since the** (*poorve*) **time immemorial,** (*yathaa*) **as the** (*devaa*) **scholars have set high standards of** (*sañ jaanaanaa*) **unity by** (*upaasate*) **fulfilling their** (*bhaagañ*) **share of duties diligently, so should you work together harmoniously for the common good.**

४४ मात्राओं वाले त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध तीसरे मन्त्र में सभी के लिए एकजुट हो राष्ट्रहित में कार्य करने का निर्देश है ।

संवननः ऋषिः। सञ्ज्ञानम् देवता।

स॒मा॒नो मन्त्रः॒ समि॑तिः समा॒नी स॑मा॒नं मनः॑ स॒ह चि॒त्तमे॑षाम् ।
स॒मा॒नं मन्त्र॑मभिम॒न्त्रये वः समा॒नेन॑ वो ह॒विषा॑ जुहोमि ॥३॥ ऋग् १०:१९१:३

स॒मा॒नः । मन्त्रः॑ । सम्ऽइ॑ति । स॒मा॒नी । स॒मा॒नम् । मनः॑ । स॒ह । चि॒त्तम् । ए॒षा॒म् ।
स॒मा॒नम् । मन्त्र॑म् । अ॒भि । म॒न्त्र॒ये । वः॒ । स॒मा॒नेन॑ । वः॒ । ह॒विषा॑ । जु॒होमि॒ ॥

राष्ट्र में मार्गदर्शक व न्याय व्यवस्था के (*मन्त्रः*) **मन्त्र सबके लिए** (*समानः*) **समान हों;** (*सम्ऽइति*) **व्यवहार के नियम सबके लिए** (*समानी*) **समान हों अर्थात् छुआछूत आदि से रहित हों।** (*एषाम्*) **सबके** (*मनः*) **मन** (*समानम्*) **एक समान केवल उन्नति की दिशा में चलें। सबकी** (*चित्तम्*) **भावनाएं भी एक समान** (*सह*) **सौहार्द वाली हों। ईश्वर ने व राजा ने** (*वः*) **तुम सबके लिए** (*समानम्*) **एक समान** (*मन्त्रम्*) **अधिकारों का** (*मन्त्रये*) **नियम व विधान** (*अभि*) **रचा है।** (*वः*) **तुम्हारे पुरुषार्थ से अर्जित धन में से** (*हविषा*) **ईश्वर के लिए आहुति और राजा के लिए कर** (*जुहोमि*) **देने का नियम भी सबके लिए** (*समानेन*) **समान हों। सबके लिए नियम, अधिकार, कर आदि समान होने के साथ साथ वैदिक धर्म के अनुरूप भी हो और कोई भी नियम या अधिकार वेदों की आज्ञा का उलंघन ना करे।**

हो विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हो। ज्ञान देते हो बराबर, भोग्य पा सब नेक हो॥

The third mantra with 44 vowels, composed in *triṣhṭup chhandaḥ* and *dhaivataḥ svaraḥ*, tells us to work harmoniously towards the prosperity of the nation.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, **devataa** sañjñaanam

3. Om samaano mantraḥ samitiḥ samaanee
samaanam manaḥ saha chittam-eṣhaam
samaanam mantram abhi-mantraye vaḥ
samaanena vo haviṣhaa juhomi Ṛig 10.191.3

In the nation everyone should have (*samaano*) **equal** (*mantraḥ*) **rights, opportunities and access to law enforcement. The** (*samitiḥ*) **code of conduct should be** (*samaanee*) **same for everyone as well; devoid of any discriminatory policies. Everyone's** (*manaḥ*) **thought should be** (*samaanam*) **similarly geared towards the prosperity of the nation. And** (*eṣhaam*) **everyone's** (*chittam*) **feelings and dispositions should be in** (*saha*) **harmony. God has created and the king should** (*abhi*) **create a** (*mantraye*) **constitution granting** (*samaanam*) **equal** (*mantram*) **rights** (*vaḥ*) **for all of you. There is also a** (*samaanena*) **non-discriminatory** (*juhomi*) **provision of** (*haviṣhaa*) **tax for the king and offerings for God, out of** (*vo*) **your hard earned wealth. The rights, opportunities, code of conduct, taxes etc., apart from being equitable should also be in accordance with the dharma established in the Vedas and not transgress any of the teachings of the Vedas.**

३१ मात्राओं वाले निचृदनुष्टुप् छन्द व गान्धार स्वर में निबद्ध चौथे मन्त्र में दल के सदस्यों के लिए परस्पर सहयोग का संदेश है।

संवननः ऋषिः। सञ्ज्ञानम् देवता।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥ ऋग् १०:१९१:४

समानी । वः । आऽकूतिः । समाना । हृदयानि । वः ।
समानम् । अस्तु । वः । मनः । यथा । वः । सुऽसह । असति ॥

(*वः*) **तुम्हारे** (*आऽकूतिः*) **संकल्प** (*समानी*) **समान हों ।** (*वः*) **तुम्हारी** (*हृदयानि*) **भावनाएं** (*समाना*) **समान हों ।** (*वः*) **तुम्हारी** (*मनः*) **इच्छाएं** (*समानम्*) **समान** (*अस्तु*) **हों ।** (*यथा*) **जिससे** (*वः*) **तुम्हारे** (*सुऽसह*) **उत्तम मेल में** (*असति*) **कोई विरोध न हो ।**

हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा । मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख संपदा ॥

The fourth mantra with 31 vowels, composed in *nichṛid-anuṣhṭup chhandaḥ* and *gaandhaaraḥ svaraḥ*, advises that members of a team should act in harmony.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, **devataa** sañjñaanam

4. Om samaanee va aakootiḥ samaanaa hṛidayaani vaḥ
samaanam astu vo mano yathaa vaḥ su-saha-asati Ṛig 10.191.4

(*va*) **Your** (*aakootiḥ*) **determinations should be** (*samaanee*) **perfectly harmonious;** (*vaḥ*) **your** (*hṛidayaani*) **hearts should be in** (*samaanaa*) **absolute accord;** (*vo*) **your** (*mano*) **feelings and aspirations** (*astu*) **should be in** (*samaanam*) **harmony;** (*yathaa*) **so that there** (*asati*) **is no obstacle in** (*vaḥ*) **your** (*su-saha*) **strong fellowship and unity.**